## 1. मानसिक शांति पाने के लिए-

मंत्र : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं अर्हं नमः ।

प्रति दिन ९ बजे से पहले एक माला गिननी चाहिए
और रात को सोने से पहले एक माला गिननी है ।

## 1. To get peace of mind –

**Mantra : Om Hrim Shrim Klim Blum Arham Namah.**

One rosary should be counted before 9 am every day and
one rosary should be counted before going to bed at night.

## 2. उपलब्धि पाने के लिए-

मंत्र : ॐ ऐं ॐ नमः ।

किसी भी शुभ कार्य में सफलता पाने के लिए इस मंत्र को
घर से बाहर निकलने से पहले ९ बार गिनना है ।

## 2. For accomplishment –

**Mantra : Om Aim Om Namah.**

To get success in any auspicious deed,
this mantra has to be counted 9 times
before leaving the house.

## लडो मत, छोडो सब

जैन धर्म के प्रथम आद्य तीर्थंकर श्री आदिश्वर भगवानने दीक्षा ग्रहण करने के वक्त अपने १०० पुत्रों को राज्य-साम्राज्य दे दिये थे लेकिन इस पृथ्वी पर चक्रवर्ती बनने के लिए सर्जित हुए ज्येष्ठ पुत्र भरत महाराजाने अपने सभी छोटे ९९ भाइयों को अपनी आज्ञा में आने के लिए संदेश भेज दिया, परिणाम स्वरूप बाहुबली को छोडकर शेष सभी ९८ भाईयों शिकायत लेकर प्रभु आदिनाथ के चरणों में पहुंचे और प्रभु से कहा कि-अब हम क्या करे ? हम सब मिलकर भरत से युद्ध करे या फिर कुछ और ?

परमात्मा श्री आदिश्वर भगवानने जवाब देते हुए कहा : हे आर्यपुत्रो ! इस आत्माने राज्य-साम्राज्य तो अनेक भवो में प्राप्त किया होगा और मृत्यु आने पर सब कुछ छोडकर जाना भी पडा होगा परंतु यह मनुष्य भव तो आत्म साम्राज्य के धणी बनने के लिए, स्वामी बनने के लिए, मालिक बनने के लिए मिला है इस लिए लडो मत, छोडो सब... संयम स्वीकार करके साधना के मार्ग पर चलते हुए कर्मों पर विजय प्राप्त करो और सिद्धगति के स्वामी बनकर मोक्षनगरी के मालिक बनो ।

यह है, आदिनाथ भगवान के द्वारा एक श्रेष्ठ पारिवारिक संदेश ।

## Don't fight, sacrifice everything

The first and prime Tirththankar of Jain religion, Shri Adeshwar Bhagwan before taking ***DIKSHA*- (renouncing materialistic pleasures and leading a life as a saint)** distributed his entire kingdom and empire between his 100 sons, but his eldest son Bharat Maharaja who was destined to become a Chakravarti on this earth, messaged all his 99 brothers to follow his commands. As a result of this, 98 of his brothers excluding Bahubali, went to Shri Adeshwar Bhagwan and complained, requesting him for his guidance as to what they should do. They asked him whether they should go to fight against Bharat? Shri Adeshwar Bhagwan said: "Oh sons of the Aryans, our souls would have in its numerous births lived as Kings and Emperors and every time would have had to giveup all that. However, this birth as a human being has been destined to conquer the soul and become its lord, hence there is no need to fight instead sacrifice everything. Accept restraint and through meditation conquer your deeds and actions in order to achieve ***Salvation*** and ***MOKSHA*– (The transcendent state attained as a result of being released from the cycle of rebirth).**

This was the best practical advice for family bonding given by Shri Adeshwar Bhagwan.

## नाम में क्या है ?

मनुष्य अपने जीवन में खुद के नाम के पीछे इतना व्यस्त रहता है कि मानो उसके बगैरह कोई काम ही ना होता हो, जीवन की सब से बडी यह भूल है परंतु इतिहास कहता है कि नाम में क्या रखा है ? अच्छे काम करते रहो दुनिया की जुबां पर आपका नाम यूं हीं आता रहेगा बाकी नाम तो नाशवंत है ।

भरत महाराजा जब चक्रवर्ती बने अर्थात् पूरी दुनिया का एक ही राजा बने तब की यह घटना है । जब कोई चक्रवर्ती बनते है तो उन के पुण्यबल की व्यवस्था के अनुसार उनको ऋषभकुट पर्वत पर ले जाया जाता है और तक्षशिला नाम की गुफा में ले जाकर काकिणी रत्न से एक पथ्थर की शिला पर खुद का नाम अंकित करवाया जाता है ।

भरत महाराजाने वहां पहुंचकर देखा तो आश्चर्यचकित हो गए की यहां पर तो पथ्थर की शिला पर एक भी नाम लिखने की जगह नही बची है तो अब मैं मेरा नाम कहां लिखूंगा और कैसे लिखूंगा ?

मंत्रीश्वरने समजाते हुए कहा कि- हे राजन ! यहां किसी एक नाम को मिटाकर वहां अपना नाम लिखना होता है बस, यह सुनते ही उनकी अंतर आत्मा जग गई उसी दिन से **राज्य व्यवस्था** सम्हालने के बावजूद भी प्रति पल **अंतर अवस्था** को वैराग्यवासीत कर दी और बिना नाम वो करते रहे सारे काम... फलस्वरूप जिस को हम आज भी भारत के रूप में जानते है ।

मेरा आप से एक ही अनुरोध है कि- बिना नाम करो सारे काम ताकि दुनिया ढूंढे आप का नाम...

नाम में क्या है वो तो बिलकुल नाशवंत है ।

## What is in a Name ?

Human beings are so busy in life pursuing their name as if without them no work can be completed, which is life's biggest mistake as even History speaks "What is in a Name"? Keep doing good deeds and your name will automatically come up on the lips of others, besides name is perishable or mortal.

Once Bharat Maharaja became a Chakravarti king, which means he was the King of the entire world. When a King becomes a Chakravarti, to respect his immense power, he is taken to Rishabhkut Hill and in a cave named Takshashila, he writes his name on a stone with a Kakini Jewel.

Bharat Maharaja was surprised that there was no space remaining anywhere to write his name and he wondered where he would write his name. His minister then said to him – Hey King, you have just to erase one of the earlier names and write your name in its place. On hearing this, his inner soul was awakened and from that day, in spite of his having to take care of the everyday needs of his kingdom, his inner soul was bent towards abstinence and he kept on doing good deeds without bothering to publicize his name. As a result, we see that our country is known by the name Bharat.

My request to one and all is – Keep doing good deeds without bothering about fame so that the world searches for your name.

## नवांगी पूजा की ९ दिव्य प्रार्थनाए

1. **दोनो चरण अंगूठे-**
   हे परमात्मा ! विनय गुण की प्राप्ति होजो ।
   - यह पूजा सभी जीवो के प्रति सम्मान बनाए रखने हेतु है ।
2. **दोनो घूंटने पर-**
   हे परमात्मा ! साधना शक्ति अखंड मिलजो ।
   - यह पूजा आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करने हेतु है ।
3. **दोनो कलाई पर-**
   हे परमात्मा ! दान शक्ति अविरत वहेजो ।
   - यह पूजा निरंतर सत्कार्य के लिए दान भावना जगाने हेतु है ।
4. **दोनो कंधे पर-**
   हे परमात्मा ! अहंकार मेरा नष्ट होजो ।
   - यह पूजा अहंकार के नाश के लिए है ।
5. **मस्तक-शिखा पर-**
   हे परमात्मा ! सिद्धशीला की ऊंचाई प्राप्त होजो ।
   - यह पूजा आध्यात्मिक जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए है ।
6. **ललाट पर-**
   हे परमात्मा ! भाग्य मेरा अखंड होजो ।
   - यह पूजा निरंतर सौभाग्य प्राप्त के लिए है ।
7. **कंठ पर-**
   हे परमात्मा ! शुभ वाणी-शुभ वचन प्राप्त होजो ।
   - यह पूजा भाषा की मिठाश प्राप्त करने के लिए है ।
8. **हृदय पर-**
   हे परमात्मा ! राग-द्वेष मेरा नष्ट होजो ।
   - यह पूजा घृणा या शत्रु भाव मिटाने के लिए है ।
9. **नाभी पर-**
   हे परमात्मा ! ज्ञानवैभव-गुणवैभव-संस्कारवैभव प्राप्त होजो ।
   - यह पूजा ज्ञान और संस्कार प्राप्त करने के लिए है ।

Note : जिन को नवांगी पूजा के दोहे नही आते हो उनको यह ९ दिव्य प्रार्थना बोलते हुए प्रभु की पूजा करनी चाहिए ।

## 9 Divine Prayers of Navangi Pooja

1. **(On the Toes of the Feet)**
   Oh God! Grant Me the Quality of Humility & Being Respectful
   - This Pooja is for Developing Respect Towards All Beings
2. **(On Both Knees)**
   Oh God! Give me the Unbroken Power of Concentration & Meditation
   - This Pooja is for Acquiring Strength to Lead a Spiritual Life
3. **(On Both Wrists)**
   Oh God! May The Intentions of Charity & Benevolence Always Flow
   - This Pooja is for Continued Charity towards Good Deeds
4. **(On Both Shoulders)**
   Oh God! May My Ego Dissolve,
   - This Pooja is for Destruction of Personal Ego
5. **(On The Centre of the Head)**
   Oh God! May I Reach the Highest of Summit.
   - This Pooja is for Achieving Success in Spiritual life
6. **(On the Forehead)**
   Oh God! May My Fortune Always Shine & Remain Integrated
   - This Pooja is for Continued Good Luck
7. **(On the Base of the Neck)**
   Oh God! Bless Me with Noble Speech & Noble Expressions.
   - This Pooja is for Sweet Language
8. **(On the Heart)**
   Oh God! May I be Able to get Rid of my Lust & Hatred
   - This Pooja is for Refraining from too much Craving as well as Hatred or Enmity.
9. **(On the Navel)**
   Oh God! May I be able to achieve the Glorious Qualities & Noble Character & Inherit them into My Nature
   - This Pooja is for Acquiring Knowledge and Virtue

**Special Note :** Those who do not know the 9 Sanskrit couplets of worship, they should worship GOD while saying these 9 divine prayers.